RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 32 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 5 नवम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-74, अंक : 32, 2-5 नवम्बर 2017 तदनुसार 20 कार्तिक सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में

आर्य समाज, नवांशहर द्वारा आयोजित

आर्य महासम्मेलन

रविवार 5 नवम्बर, 2017

स्थान : राधा कृष्ण आर्य कालेज, राहों रोड़, नवांशहर

कार्यक्रम

गायत्री महायज्ञ	:	प्रात 9:00 बजे से 10:00 बजे तक
अल्पाहार	:	10:00 बजे से 11:00 बजे तक
ज्योति प्रज्ज्वल	:	प्रात: 11:00 बजे से 11:20 बजे तक
ध्वजारोहण	:	प्रात: 11:20 बजे से 11:25 बजे तक श्री सुदर्शन शर्मा जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब
आर्य भजन	:	प्रात: 11:25 बजे से 11:55 बजे तक डॉ० ममता जोशी (सुप्रसिद्ध गायिका)
परिचय आर्य महासम्मेलन एवं अतिथिगण	:	प्रात: 11:55 बजे से दोपहर 12:10 बजे तक
वक्तव्य	:	दोपहर 12:10 बजे से 12:40 बजे तक आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (वैदिक प्रवक्ता) नई दिल्ली
आर्य भजन	:	दोपहर 12:40 बजे से 12:50 बजे तक
वक्तव्य	:	दोपहर 12:50 बजे से 1:20 बजे तक प्रो० (डॉ०) प्रतिभा शुक्ला, संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
आशीर्वचन	:	दोपहर 1:20 बजे से 1:35 बजे तक स्वामी सम्पूर्णानन्द जी
सम्मान समारोह	:	दोपहर 1:35 बजे से 1:45 बजे तक
धन्यवाद ज्ञापन	:	दोपहर 1:45 बजे से 1:55 बजे तक
शान्तिपाठ एवं राष्ट्र गाण	:	दोपहर 1:55 बजे से 2:00 बजे तक
ऋषि लंगर	:	दोपहर बाद 2:15 बजे से

निवेदक

सुदर्शन शर्मा — प्रधान
प्रेम भारद्वाज — महामन्त्री
सुधीर शर्मा — कोषाध्यक्ष
अशोक परूथी — रजिस्ट्रार
विनोद भारद्वाज — संयोजक

मानव जीवन की नींव-धर्म

ले. -प्रो० रत्न सिंह गाजियाबाद (उ.प्र.)

ओ३म् शन्नो मित्रः शं, वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा।

शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

दृश्यमान जगत् में हम चेतन और अचेतन दोनों प्रकार की सत्ताओं का अनुभव करते हैं। दोनों का अस्तित्व वास्तविक है। दोनों एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं। परन्तु स्वतन्त्र होने पर भी परस्पर सहयोग से ही कार्य रूप जगत् की उत्पत्ति होती है। प्रकृति जड़ है और पुरुष चेतन। पुरुष के दो भेद हैं-आत्मा और परमात्मा। आत्मा अनेक हैं और परमात्मा एक है। ये तीनों पदार्थ नित्य और अनादि हैं। इस जगत् का परमात्मा निमित्त कारण है और प्रकृति चेतन की प्रेरणा के बिना स्वतन्त्र रूप से नहीं होती। समस्त विश्व के सर्ग और संचालन का नियन्ता एक चेतन परमात्मा है। प्रकृति में प्रत्येक क्रिया, विकार या परिणाम चेतन परमात्मा की प्रेरणा, संकल्प या ईक्षण से होता है। पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार ईश्वर जीवात्मा को शरीर प्रदान करता है। आत्मा और शरीर के संयोग को ही जन्म कहते हैं। योनियां अनेक हैं जिनमें मानव योनि सर्वश्रेष्ठ है। आत्मा को मानव योनि की प्राप्ति ही मानव जीवन का आरम्भ है। मानव शरीर में रहने वाले पंच कोशों से ही जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है।

मानव जीवन के सम्बन्ध में दार्शनिक क्षेत्र में दो परस्पर विरोधी विचारधारायें मिलती हैं। एक है भौतिकवादी दृष्टि कोण-जिसके अनुसार यह दृश्यमान जगत् ही सत्य है। यह मत प्रत्यक्ष को ही एक मात्र प्रमाण मानता है। जिसका प्रत्यक्ष है वही सत्य है-अप्रत्यक्ष तत्वों की सत्ता में यह विश्वास नहीं करता। पंचभूतों में से यह आकाश की सत्ता को प्रत्यक्ष न होने के कारण स्वीकार नहीं करता। यह जगत् पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु इन चार भूतों से मिलकर बना है। मानव शरीर भी अन्य जड़ पदार्थों के समान इन्हीं चार भूतों का परिणाम है। इस मतानुसार ईश्वर, जीव, मोक्ष, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म आदि की सत्ता नहीं है क्योंकि ये सब अप्रत्यक्ष है। भारतीय दर्शन में यह मत चार्वाक के नाम से प्रसिद्ध है। आचार की दृष्टि से इसका मत यह है:

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।

भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।

अर्थात् जब तक जीवित रहे सुख का भोग करे। यदि पैसा पास न हो तो कर्ज लेकर मौज मस्ती करे। भविष्य में कर्ज चुकाने की चिन्ता न करे क्योंकि शरीर के भस्म होने के बाद फिर जन्म नहीं होता।

मानव जीवन सम्बन्धी दूसरी विचार धारा के अनुसार यह दृश्यमान जगत् मिथ्या है, केवल ब्रह्म सत्य है और जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं। दार्शनिक जगत् में इस विचार को नवीन वेदान्त का सिद्धान्त कहा जाता है। महर्षि दयानन्द ने इस सिद्धान्त को नास्तिक माना है और इससे अनेक हानियाँ बतलाई है। ''वेदान्तिध्वान्त निवारणम्'' में महर्षि दयानन्द लिखते हैं; ''जगत् को मिथ्या मानने में जगत् की उन्नति, परस्पर प्रीति और विद्यादि गुणों की प्राप्ति करने में पुरुषार्थ और श्रद्धा अत्यन्त नष्ट होने से जगत् के जितने उत्तम कार्य है, वे सब नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं। ''जीव और ब्रह्म को एक मानने से परमार्थ सब नष्ट हो जाता है। क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा का पालन, स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने की प्रीति बिल्कुल छूटने से केवल मिथ्याभिमान, स्वार्थसाधन तत्परता, अन्याय का करना, पाप में प्रवृत्ति, इन्द्रियों से विषयों के भोग में फँसते हैं।'' अन्तःकरणवच्छिन्न चेतन को जीव कहते हैं, नवीन वेदान्तियों के इस मत का खण्डन करते हुए महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में लिखते हैं, ''वाह रे झूठे वेदान्तियों तुमने सत्य स्वरूप, सत्यकाम सत्य कल्प परमात्मा को मिथ्याचारी कर दिया। क्या वह तुम्हारी दुर्गति का कारण नहीं है? तुम मिथ्या संकल्प और मिथ्यावादी होकर वही अपना दोष ब्रह्म में व्यर्थ लगाते हो।''

इस प्रकार हमने देखा कि मानव जीवन के लिए इन दोनों विचार-धाराओं में से कोई भी हितकर नहीं है। भौतिक सामग्री का संग्रह कर उसका अधिक से अधिक भोग करने से मनुष्य का भला नहीं हो सकता। ''न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः''

नचिकेता का यह कथन पूर्णतः सही है। दूसरी और इस जगत् को मिथ्या मानकर अपने सांसारिक कर्तव्यों के पालन से सर्वथा विमुख होकर केवल ब्रह्म ब्रह्म की रट लगाने से भी हित सिद्ध नहीं होता। इन दोनों मतों को साधारणतः भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के नाम से पुकारा जाता है।

जैसा कि हम प्रारम्भ में संकेत कर चुके हैं कि मनुष्य के जीवन में दो तत्व हैं। एक भौतिक और दूसरा अभौतिक या आध्यात्मिक। शरीर और इन्द्रियाँ भौतिक हैं तथा जीवात्मा आध्यात्मिक है। जीवित रहने के लिए उचित खुराक की आवश्यकता पड़ती है। शरीर के स्वस्थ रहने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान आवश्यक है। भौतिक पदार्थों, जल, वायु, भोजन, प्रकाश, औषध आदि के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। परन्तु मनुष्य के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। पशु-पक्षी भी किसी न किसी रूप में अपनी इन आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं। पशु जगत् से ऊँचा उठने के लिए मनुष्य को आत्मिक खुराक भी चाहिए। इस प्रकार मनुष्य को आवश्यकता है एक ऐसी वस्तु की जो इसकी दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। हमारे शास्त्रों में उसी को धर्म कहा गया है।

धर्म शब्द के व्यापक अर्थ होते है। संसार की किसी भी भाषा के एक शब्द में इस शब्द का अनुवाद नहीं किया जा सकता। धर्म का शब्दार्थ होता है ''जो धारण करे''-धारणाद्धर्मः। किसी वस्तु के वे गुण जिनसे वह वस्तु अपने रूप में धारित रहती है, बनी रहती है, उस वस्तु का धर्म कहलाते हैं। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि जिन तत्वों से पदार्थ का अस्तित्व हो वही सत्व इस पदार्थ का धर्म है। दूसरे शब्दों में जिन तत्वों के नष्ट हो जाने पर पदार्थ भी नष्ट हो जाए, वे तत्व उस पदार्थ के धर्म हुए। उष्णता के नष्ट होने पर अग्नि ''अग्नि'' न रहकर राख बन जाती है। अतः उष्णता अग्नि का धर्म हुआ। हम देखते हैं कि प्रत्येक पदार्थ का अपना एक धर्म होता है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य का भी एक धर्म है। हमारे मनीषियों ने धर्म को कई प्रकार से परिभाषित किया है। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के ''वेदोक्त धर्म विषय'' में लिखा है ''क्योंकि जो न्याय अर्थात् पक्षपात को छोड़कर सत्य का आचरण और असत्य का परित्याग करना है उसी को धर्म कहते हैं। यही धर्म का स्वरूप और सबसे उत्तम धर्म है।'' उसी परिभाषा को कुछ विस्तार के साथ व्यवहार भानु में इस प्रकार लिखा है:-''जो पक्षपात रहित न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, पाँचो परीक्षाओं के अनुकुल आचरण, ईश्वर आज्ञा पालन, परोपकार करना धर्मरूप और जो इससे विपरीत वह अधर्म कहाता हैं।''

वैशेषिक दर्शन प्रथम अध्याय सूत्र २ में धर्म का स्वरूप यह बतलाया गया है-

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।

जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि प्राप्ति होती है, वह धर्म है। प्रायः सभी व्याख्याकारों ने इस धर्म पद का अर्थ सत्-आचार, श्रेष्ठ आचार आदि किया है। जीवन के नैतिक गुण अर्थ में इसका प्रयोग किया है। वर्तमान समय के प्रसिद्ध दार्शनिक पंण्डित उदयबीर शास्त्री इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि वैशेषिक शास्त्र में प्रतिपादित विवरण के अनुसार यह अर्थ सर्वथा महत्वहीन है क्योंकि यहाँ द्रव्य आदि छह पदार्थ और उनकी विभिन्न साधारण व असाधारण विशेषताओं का वर्णन है सत् आचार आदि का नहीं। यहाँ यह बात कुछ अटपटी सी लगती है कि द्रव्यादि पदार्थो का ज्ञान अभ्युदाय के अतिरिक्त निःश्रेयस की प्राप्ति में उपयोगी साधन हो सकता है। इसका समाधान शास्त्री जी ने बड़े सुन्दर ढंग से किया है। उनका कथन है कि अभ्युदय का तात्पर्य अपने चालू जीवन में विविध साधनों के आधार पर अपनी सुख सुविधाओं की उपलब्धि करना है। आज भौतिक तत्वों के यथायत स्वरूप को जानकर वैज्ञानिक वर्ग ने ऐहिक सुख सुविधाओं के उपकरणों का अम्बार लगा दिया है। यही है वैशैषिक के अभ्युदय का वास्तविक अर्थ द्रव्यादि पदार्थों के यथार्थ ज्ञान से हम इस अभ्युदय की सिद्धि अनायास कर सकते हैं।

निःश्रेयस् की सिद्धि के लिए द्रव्यादि का यथार्थ ज्ञान किस प्रकार उपयोगी है, यह भी समझ लेना चाहिए। साधारणतः प्रत्येक व्यक्ति अपने देह को अपना आत्मा समझता है। वह इस ओर दृष्टिपात नहीं करता कि यह नश्वर है, एक दिन पैदा हुआ है और वह दिन अवश्य आयेगा जब यह नहीं रहेगा, नष्ट हो जाएगा। जो द्रव्यादि पदार्थ रूप में जाने जाकर हमारी विविध सांसारिक सुख सुविधाओं के जनक होते हैं ये सब नश्वर हैं। यह समझकर विवेकशील आत्मा अपने वास्तविक रूप को पहचानने की ओर आकृष्ट होता है। इन पदार्थो का ऐसा वास्तविक रूप को पहचानने की ओर आकृष्ट होता है। इन पदार्थों का ऐसा वास्तविक ज्ञान आत्मा को निःश्रेयस् सिद्धि के लिए उपयोगी समझना चाहिए। स्पष्ट है कि धर्म शब्द का अर्थ पदार्थ की विशेषताएं हो अथवा सदाचार, श्रेष्ठाचार दोनों का लक्ष्य एक ही है और वह अभ्युदय

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

5 नवम्बर को नवांशहर पहुंचे

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से आर्य समाज नवांशहर के संयोजकत्व में नवांशहर की प्रमुख शिक्षण संस्था आर. के.आर्य. कॉलेज नवांशहर में 5 नवम्बर 2017 रविवार को आर्य महासम्मेलन के रूप में भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है। पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं के महानुभावों से निवेदन है कि इस भव्य समारोह में बढ़-चढ़ कर भाग लें। आप सभी के पावन सहयोग से इस आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्थापित आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए तथा वेद की पवित्र वाणी को घर-घर तक पहुंचाने के लिए ही इस आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द जी का जीवन वैदिक संस्कृति एवं वेदों के प्रति समर्पित रहा है। वेदों के प्रचार एवं प्रसार को स्थाई रूप देने के लिए ही उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य वेद प्रचार और वेद पर आधारित महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों का प्रचार और प्रसार करना है। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का मुख्य उद्देश्य लोगों को पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों, मूर्तिपूजा के श्राप से मुक्त करना था। अपना आशय स्पष्ट करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि मेरा किसी भी नवीन मत को चलाने का लेषमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुडवाना मुझको अभीष्ट है अर्थात् यूं कहें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का उद्देश्य संसार में सत्य पर आधारित वेद के सिद्धान्तों को पुनर्स्थापित करना था। महाभारत युद्ध के पश्चात हम जिस रसातल की ओर जा रहे थे। अपने सत्य ग्रन्थ वेदों को भूलकर पुराणों और अनार्ष ग्रन्थों में पड़कर समाज में बहुत सी नई कुरीतियों ने जन्म लिया था। मूर्तिपूजा के कारण समाज की बहुत हानि हो रही थी। लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति की ओर उन्मुख हो रहे थे। सामाजिक कुरीतियों के कारण समाज कई टुकडों में बंट चुका था। जातिवाद और छूआछूत के कारण लोगों में एक दूसरे के प्रति द्वेष और छल कपट की भावनांए थी। जिसके परिणामस्वरूप हम पहले मुगलों के आधीन रहे और उसके पश्चात हमें अंग्रेजों की दासता सहनी पड़ी। ऐसे समय में एक ऐसी क्रान्ति की आवश्यकता थी जो राष्ट्र को जहां सामाजिक कुरीतियों से मुक्त कर सकें वहीं पर धर्म पर नाम पर हो रहे व्यापार से लोगों को छुटकारा मिले। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिससे धर्म के नाम पर व्यापार करने वालों की जड़े हिल गई और समाज में फैल रही कुरीतियों से भी लोगों से छुटकारा मिला। आर्य समाज ने एक ऐसी क्रान्ति को जन्म दिया जिसे धधकती आग का नाम दिया गया। जिस आग में सभी सामाजिक कुरीतियां जलकर भस्म हो गई। इसके साथ ही लोगों में स्वतन्त्रता के प्रति भाव जागृत हुए। आर्य समाज ने अपने आरम्भिक काल से लेकर आज तक समाज को एक नई दिशा देने का कार्य किया है और आगे भी करता रहेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का आर्य महासम्मेलन को करने का उद्देश्य है कि लोगों में महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के प्रति जागरूकता बढ़े। जब तक आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार नहीं होगा तब तक महर्षि दयानन्द के कार्यों के प्रति लोग जागरूक नहीं होंगे। वैदिक सिद्धान्त ही आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त हैं। आज समय की मांग है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक जागरूक होकर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य का जिम्मेदारी के साथ वहन करे। यह काम केवल आर्य समाज कर सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सदैव इस कार्य के लिए प्रयासरत है कि आर्य समाज के लक्ष्य और उद्देश्य की प्रति आम जनता को जागृत किया जाए। इसके लिए सभा में वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर दिया जाता है। पंजाब प्रान्त के साथ-साथ अन्य प्रान्तों के लोग भी सभा कार्यालय में प्रचारार्थ साहित्य लेने के लिए आते हैं। इसलिए सभी आर्य समाजें लोगों में नि:शुल्क साहित्य बांट कर आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार के कार्य को आगे बढ़ाने में सहयोग करें। इसके साथ ही सभा के द्वारा सभी संस्थाओं एवं गुरूकुलों को आर्थिक सहयोग दिया जाता है ताकि वेद प्रचार का कार्य चलता रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब निरन्तर आगे बढ़ रही है। जहां वे स्वयं दानशील हैं, समाज के कार्यों में, परोपकार के कार्यों में हमेशा आगे रहते हैं उसी प्रकार सभी को ऐसे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। अपने पिता स्व. पं. हरबंस लाल शर्मा जी के पद्चिह्नों पर चलते हुए इनका सारा परिवार आर्य समाज के प्रति समर्पित है। समाज सेवा के क्षेत्र में इस परिवार का अपना विशेष सम्मान है। दीन-दुखियों की सहायता करना यह परिवार अपना धर्म समझता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी का मानना है कि सभी कार्य एक दूसरे के सहयोग और उत्साह के साथ ही सम्पन्न होते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आप सबके सहयोग से कार्यक्रमों का आयोजन करती है और वेद प्रचार के कार्यों को इसी प्रकार जारी रखेगी। यह वेद प्रचार कार्यों की श्रृंखला आर्य महासम्मेलनों के रूप में इसी प्रकार चलती रहेगी। 19 फरवरी को महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर लुधियाना में आर्य महासम्मेलन का आयोजन बहुत ही सफलतापूर्वक किया गया था जिसमें आप सभी आर्यजनों ने बढ़-चढ़ कर सहयोग दिया था। इस बार 5 नवम्बर को आर्य महासम्मेलन का आयोजन आर्य समाज नवांशहर के संयोजन में आर. के.आर्य कॉलेज नवांशहर में किया जा रहा है। इसी प्रकार आगे भी अलग-अलग जिलों में यह आयोजन चलता रहेगा।

अंत में मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मान्य पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों पंजाब की सभी आर्य समाजों, एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन करता हूं कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग दें। वेद की वाणी को घर-घर तक पहुंचाने के लिए अपनी-अपनी आर्य समाजों की तरफ से भारी संख्या में लोगों को नवांशहर लेकर आएं। अपनी-अपनी आर्य समाज एवं संस्थाओं के बैनर एवं ओ३म् के ध्वजों से वाहनों को सजाएं और महर्षि दयानन्द के जयघोष करते हुए उत्साह के साथ नवांशहर पधारें। सभा के सभी कार्य आप सबके सहयोग से ही आगे बढ़ रहे हैं। आगे भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आपसे इसी प्रकार सहयोग लेकर आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार को जारी रखेगी।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर का 68वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर का 68वां वार्षिकोत्सव दिनांक 13-11-2017 से 19-11-2017 तक बड़ी श्रद्धा एवं उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा जिसके ब्रह्मा आचार्य शिवदत्त पाण्डे जी होंगे। भजनोपदेशक पं. देव आर्य जी तथा श्रीमती रश्मि घई जी के होंगे। प्रात:काल 7:00 से 9:00 बजे तक यज्ञ भजन एवं प्रवचन होंगे तथा सांयकाल 6:30 से 8:00 बजे तक संध्या, भजन एवं प्रवचन होंगे। 18-11-2017 को ध्वजारोहण आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी के करकमलों द्वारा किया जाएगा। सांयकाल स्व. श्री विजय सेठी जी की मधुर स्मृति में भजन संध्या का आयोजन श्रीमती कमलेश सेठी जी द्वारा किया जाएगा। 19-11 2017 दिन रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति 51 हवनकुण्ड़ों पर की जाएगी। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी होंगे तथा मुख्य अतिथि श्रीमती विजय चोपड़ा जी होंगी। यह कार्यक्रम दोपहर 1:30 बजे तक चलेगा। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर होगा। आप सभी सपरिवार व इष्टमित्रों सहित इस पावन अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं।

काम आयें सर्वदा शुभकामनायें

ले. -देवनारायण भारद्वाज

वह दिन का अन्तिम समय था। सब घर जाने को तैयार थे, तभी प्लान्ट में एक तकनीकी समस्या उत्पन्न हो गई और वह उसे दूर करने में जुट गया। जब तक वह कार्य पूरा करता, तब तक अत्यधिक देर हो गई। दरवाजे सील हो चुके थे और लाइटें बुझा दी गयी थी। बिना हवा और प्रकाश के पूरी रात आइस प्लान्ट में फँसे रहने के भय से उसका कब्रगाह बनना तय था। घंटे बीत गये, तभी उसने किसी को दरवाजा खोलते पाया। सिक्यूरिटी गार्ड टार्च लिये खड़ा था। उसने उसे बाहर निकलने में मदद की। उस व्यक्ति ने सिक्यूरिटी गार्ड से पूछा 'आपको कैसे पता चला कि मैं भीतर हूँ? गार्ड ने उत्तर दिया- 'सर इस प्लान्ट में 50 लोग कार्य करते हैं, पर सिर्फ एक आप हैं जो सुबह मुझे 'हेलो' और शाम को जाते समय 'बाय' कहते हैं। आज सुबह आप डयूटी पर आए थे, पर शाम को बाहर नहीं निकले। इससे मुझे शंका हुई और मैं देखने चला आया। वह नहीं जानता था कि किसी को छोटी सी शुभ कामना का सम्मान देना कभी उसका जीवन भी बचायेगा। जब भी आप किसी से मिले तो गर्मजोशी भरी मुस्कराहट से उसका सम्मान करें। इससे आपको भी खुशी मिलेगी और सामने वाले व्यक्ति को भी। हमें नहीं पता, पर हो सकता है कि वह आपके जीवन में भी कोई चमत्कार दिखा दे।

महात्मा विदुर ने अपने इसी अनुभव को अधिकाधिक गहराई से यों व्यक्त किया है-

चक्षुसा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम।
प्रसादयति लोकं यस्तं लोकोऽ-नुप्रसीदति।। वि.नी. 2.25।।

अर्थात् राजा हो या प्रजा-कोई भी व्यक्ति दूसरों को प्रेममयी दृष्टि से, मानसिक हित चिन्तन से, मधुरवाणी से और सहायतापूर्ण कर्म से-चार प्रकार से प्रसन्न करता है उसे दूसरे लोग भी प्रसन्न करते है।

शुभकामना को अंग्रेजी में Good wishes वा सवेच्छा कहते हैं। इसके व्यवहार से हम जैसी इच्छा (कामना) दूसरे के लिए करते हैं वैसी ही वह हमारे लिए करता है। विशेषज्ञ कहते हैं कि जब आप सम्बन्धों को लोगों के प्रति कुछ शब्द कहकर ही नहीं, प्रत्युत दायित्व समझ कर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव रखते हैं, उनसे सहयोग करते हैं, उनसे मधुरता का व्यवहार करते हैं, तो उस समय आपके आस पास के वातावरण में सकारात्मक संदेशों का संचार होता है। आपने इस बात पर ध्यान देंने का यत्न किया कि कब कब आपको क्षणिक ही सही मुस्कराने-हँसने या गुन गुनाने का अवसर दिया-तो तब न सही अब अवश्य उनके लिये आप कह उठेंगे धन्यवाद। यह प्रवृति आपके लिए मानसिक-शारीरिक भावनात्मक सुरक्षा के उपहार सिद्ध होगी।

मनुहार की पारस्परिकता पर वैदिक ऋषियों ने अनवरत बल दिया है। अथर्ववेद (का० 19 सूक्त 52 मन्त्र 41) द्वारा हमको सुन्दर सटीक सामयिक मार्ग दर्शन सहज ही सुलभ होता है :

कामेन मा काम आगन् हृदयाद-हृदयं परि।
यदमोषामदो मनस्तदैतूप मामहि।।

अर्थात्-कामना से कामना उत्पन्न होती है। यह एक हृदय से दूसरे हृदय के प्रति हुआ करती है। दूसरा व्यक्ति मुझे चाहता है तो मैं भी उसे चाहने लगता हूँ। उसकी कामना ने मुझ में भी कामना को उत्पन्न किया है। वस्तुत: अनुराग पारस्परिक ही हुआ करता है। जो विद्वान-मनीषी-ज्ञानी जन हैं, उनका मन हमसे मिला रहे। शिक्षण संस्थान-गुरुकुल के आचार्य सदैव अपने शिष्य के साथ नहीं रह सकते। विद्यार्थी गण तो समावर्तन के बाद गृहस्थ के कर्त्तव्यों का पालन करने हेतु दूर-दूर बिखर जायेंगे, किन्तु शिष्यगण अपने आचार्य के मन से जुड़े रहेंगे, तो उनकी यही दीक्षा जीवन उपलब्धियों की दक्षता में परिलक्षित होती दिखाई देंगी। मन की कामनाओं का पारस्परिक संचरण आचार्य-शिष्य तक ही सीमित न रहकर संसार की अनेकश: भूमिकाओं में घटित होता है। पिता-पुत्र, माता-पुत्र, पुत्री, मित्र-मित्र, राजा-प्रजा, पति-पत्नी आदि अनेक क्षेत्रों में प्रभावी होता है।

इस कामना का वास्तविक विनिमय मनोकामना के रूप में आन्तरिक होना चाहिये, केवल बाहरी कृत्रिम नहीं होना चाहिये, अन्यथा दुर्घटना घटित हो सकती है। आख्यान है कि रात्रि के घोर अन्धकार में कई चोर चोरी करने के लिए जा रहे थे। सामने से आते दिखाई दिए-सन्त तुलसी दास। चोरों ने समझा अपशकुन हो गया। पकड़े जा सकते हैं। चोर ने पूछा? तुम कौन हो? तुलसी दास ने उत्तर दिया- जो तुम हो-सो मैं हूँ। चोरों ने राहत की श्वास ली। तो, चलो हमारे साथ, तुलसीदास चल दिये। चोरों ने एक मकान भी दीवार को खोदकर नकव लगाया। तुलसीदास को बाहर खड़े रहकर उनको यह काम सौंपा-कोई दिखाई दे, तो अन्दर मिट्टी फेंक देना। हम लोग भाग खड़े होंगे। चोरों ने भीतर जाकर सामान समेटा-तभी तुलसीदास ने भीतर की ओर मिट्टी फेंकना आरम्भ कर दिया। सभी चोर सामान छोड़कर बाहर निकल कर भागे और तुलसीदास से पूछा? कौन दिखाई दिया-बताओ? तुलसीदास ने कहा-ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, वहीं दिखाई दिया। मैंने आप सबको सचेत कर दिया। सन्त तुलसीदास का उद्देश्य था-अपने हृदय की भावना को चोरों के हृदयों तक सम्प्रेषित करना। चोर इसे ग्रहण कर लेते हैं तो चोर नहीं रहेंगे सन्त बन जायेंगे। यह हृदय से हृदय तक कामना-शुभकामना का सम्प्रेषण हो जायेगा।

संसार को संचालित करने के लिए जब युवा दम्पती विवाह-बन्धन में आबद्ध होते हैं, तब सभी प्रक्रियाओं को पूर्ण करने में बाद-आशीर्वाद वाचन से पूर्व उन दोनों को परस्पर हृदय-स्पर्श कराया जाता है, इसे हृदय परिवर्तन भी कह देते हैं-''ममव्रते ते हृदय दधामि मम चित्तमनु चिंत ते अस्तु।'' इसका रहस्य एक 88 वर्षीय बुजुर्ग ने अपने पोते को उस दिन समझाया-जब वह अपनी नववधू के साथ ऊँची आवाज़ में गुस्से के साथ बात कर रहा था। उस वृद्ध ने बताया कि क्रोध की आवाज़ कठोर-कर्कश व ऊँची होती है, जबकि प्यार के सुर मधुर-शान्त व मन्द होते हैं, क्योंकि दोनों हृदय के निकट होते हैं, जबकि क्रोधावेश मैं अनेक हृदय की दूरी बढ़ती ही चली जाती है। विवाह संस्कार के हृदय-स्पर्श की भूमिका सन्तान-परिवार-समाज की सफलता की प्रवेशिका होती है। इतने पर भी संसार-सागर को तरने के लिये बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। सन्त तुलसीदास ने महाबली रावण की नम्रता का वर्णन अपनी सहायता व स्थार्थ पूर्ति के लिए छद्मवेशी मारीचि से यों किया है:

नवनिनीच कै अति दुखदाई।
जिमि अंकुस धनुउरग बिलाई।।

भयदायक खलकी प्रियवानी।
जिमि अकाल के कुसुम भवानी।

नीच का झुकना (नम्र होना) भी अत्यन्त दु:खदाई होता है, जैसे अंकुश, धनुष, साँप और बिल्ली झुकते हैं तो मनुष्य की घोर हानि करते हैं। दुष्ट व्यक्ति की मीठी वाणी भी उसी प्रकार भयदायक होती है, जैसे बिना ऋतु के फूल होते हैं। उदाहरणत: महानगर के प्रमुख मार्ग पर एक सेवानिवृत उच्चाधिकारी अपनी पत्नी के साथ जा रहे थे। स्कूटर पर दो युवक आये और नम्रता पूर्वक उनके चरण स्पर्श किये। उनका काम पूछा और एक उस काम के लिए उच्चाधिकारी को स्कूटर पर बैठाकर आगे ले गया, पीछे दूसरे ने उनकी पत्नी के आभूषण उतरवा लिए और दोनों रफूचक्कर हो गये। वेद विद्या में निष्णात युवा जब शासक-प्रशासक बनते हैं तो वे मनो विज्ञान में दक्ष होते हैं। राजा के दरबार में राजधानी के संभ्रान्त नागरिक उपस्थित हुआ करते थे। कुछ दिन से एक नया व्यक्ति आकर्षक साज सज्जा के साथ आने लगा। राजा उसको देखकर असहज अनुभव करता, वह बिल्कुल उसको पसन्द नहीं करता। राजा ने मन्त्री से परामर्श किया। उसने गुप्तचरों द्वारा खोज करायी, तो पता चला कि वह चन्दन का बड़ा व्यापारी है और उसने चन्दन का अत्यधिक भण्डारण कर रखा हैं, वह चाहता है कि इसकी बिक्री हो जाये, तो उसके पास प्रभूत धन राशि आ जाये। व्यापारी मन ही मन सोंचता था कि राजा की मृत्यु हो तो उसकी अन्तयेष्टि में चन्दन का प्रयोग हो जायेगा और वह धन से मालामाल हो जायेगा।

मन्त्री ने गुप्त आख्या से राजा को अवगत कराये बिना ही राष्ट्रभृत महायज्ञ की योजना बना दी। राजधानी यज्ञधूम से उठी। राजा-प्रजा-आचार्य सभी हर्ष विभोर हो गये। उस व्यापारी का सारा चन्दन-भण्डार महायज्ञ में उपयोग हो गया। उसको मन वांछित धन-लाभ हो गया। वह व्यापारी राज-दरबार में

(शेष पृष्ठ 6 पर)

आर्यों का मूल निवास स्थान

ले.-शिवनारायण उपाध्याय शास्त्री नगर, दादाबाड़ी-कोटा

आर्य लोग जिन्होंने वैदिक संस्कृति को जन्म दिया वे किस देश के मूल निवासी थे? यह प्रश्न सर्वप्रथम सन् 1786ई. में फिलिप्पो से सेठी ने उठाया था। इसके पूर्व ईशा से चौथी शताब्दी पूर्व सिकन्दर के आक्रमण के बाद भारत में आये मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन में सेल्यूकस निकोटार के राजदूत के रूप में रह कर भारत में दूर-दूर तक की यात्रा की थी। उसने उन यात्राओं का वर्णन भी लिखा जो अब अनुपलब्ध है परन्तु उसमें के कुछ अंश कई अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध हैं। मेगस्थनीज ने लिखा था कि भारतीयों का कभी किसी विदेशी से युद्ध नहीं हुआ था और न ही किसी विदेशी शासक ने यहाँ आक्रमण किया था। भारतीय लोग अपने को इसी देश का निवासी मानते थे तथा किसी भी अन्य देश से अपना सम्बन्ध नहीं बताते थे। उसके बाद यूनान से प्लिनी और टोलोमी भी आये उन्होंने ने भी इस प्रश्न को नहीं उठाया कि आर्य लोग भारत में कहां से आये थे ? फिर सातवीं शताब्दी में हर्ष वर्धन के समय चीन से ह्वेनसांग भारत आया वह सन् 629ई. में भारत आया था और सन् 645ई. में चीन लौट गया। उसने चीन में जाकर अपनी यात्रा का वर्णन लिखा। वह भारत की आर्थिक स्थिति से अधिक प्रभावित था। उसके अनुसार भारतीयों के रहन-सहन का स्तर ऊंचा था। सोना और चाँदी के सिक्कों का प्रचलन था। रेशमी, सूती ऊनी, कपड़ा बनाने का व्यवसाय उन्नत था। शिक्षा की व्यवस्था अच्छी थी। शैक्षणिक स्तर ऊंचा था। परन्तु उसने भारतीयों के किसी अन्य देश से भारत में आने की बात नहीं लिखी।

अरब देश से अलबेरूनी आया था। उसने देश की लम्बी यात्रा की। विजयनगर साम्राज्य के ऐश्वर्य से वह बहुत प्रभावित भी हुआ। उसने भी अपनी यात्रा का वर्णन लिखा परन्तु उसने इस प्रश्न को नहीं उठाया कि भारतीय लोग इस देश में कहीं बाहर से आये थे। यह प्रश्न तो सन् 1786ई. में ही उठाया गया। फिलिप्पो सेसेटी यूरोप का निवासी था तथा व्यापार के सिलसिले में 5 वर्ष तक गोवा में रहा था। गोवा में रहते हुए पहले उसने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया। इसके बाद फिर उसने संस्कृत भाषा तथा यूरोप की अन्य भाषाओं के शब्दों में समानता को देखकर यह विचार बनाया कि आर्य लोग प्रारम्भ में यूरोप के निवासी थे। उसकी इस धारणा को शक्ति प्रदान करने वाला बंगाल का मुख्य न्यायाधीश विलियम जोन्स बना। उसने सन् 1786 ई. में ही एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल के समक्ष इस आशय का एक पत्र पढ़ा और इस धारणा के संबंध में निम्न तर्क प्रस्तुत किये :

(1) आज की इन्डो-यूरोपयिन भाषा परिवार के शब्द और मुहावरे जितने यूरोप की भाषाओं में विद्यमान हैं उतने एशिया की भाषाओं में नहीं है। उदाहरणार्थ 'द्वौ' शब्द संस्कृत का है परन्तु यह यूरोप की विभिन्न भाषाओं में विद्यमान है-लैटिन में 'दुआ' आइरिश में 'दो' लिथूनियन में 'दु' तथा अंग्रेजी में 'टू' इससे सिद्ध होता है कि संभवत: यूरोप का कोई भाग आर्यों का आदि देश रहा होगा।

(2) यूरोप की लिथूनियन भाषा ही समस्त इण्डो-यूरोपियन भाषा परिवार में अत्याधिक परिष्कृत है और इसी कारण वह प्राचीनतम प्रतीत होता है अत: आर्यो का मूल निवास स्थान लिथूनिया या उसके आस-पास का प्रदेश रहा होगा।

प्रश्न उपस्थित हुआ कि वह मूल प्रदेश कौन सा है?

इस पर कहा गया कि हंगरी जर्मनी अथवा दक्षिणीरूस वह प्रदेश हो सकता है।

प्रो. गाइल्स ने हंगरी को आर्यो का मूल निवास स्थान माना। उन्होंने अपने पक्ष में निम्न तर्क प्रस्तुत किये-

(1) आर्यों को जिन वृक्षों का ज्ञान था वे शीतोष्ण कटिबन्ध में होते हैं।

(2) आर्यों को हाथी, गधे और खच्चर का ज्ञान नहीं था। वे लोग बैल, गाय, भैड़, बकरी, घोड़ा आदि पालते थे। पक्षियों में उन्हें बतख और गिद्ध का ज्ञान था। इन सब पशु-पक्षियों के लिए उपयुक्त स्थान कारथेनियन पर्वतमाला के समीप का प्रदेश ही उचित लगता है।

(3) आर्य लोग मूल रूप में गेहूं और जौ का प्रयोग करते थे। वे खाद्यान्न भी हंगरी के उपजाऊ मैदानों में पैदा किये जाते हैं।

प्रो. गाइल्स केवल भौगोलिक परिस्थिति के आधार पर ही हंगरी को आर्यो का मूल निवास स्थान बताता हैं। यह धारणा सर्व मान्य नहीं है इसमें केवल कल्पना का ही सहारा लिया गया है। यह भी आवश्यक नहीं है कि हंगरी की जलवायु उस काल में भी ऐसी ही थी।

पेन्का ने विचार रखा कि आर्यों की जन्म भूमि जर्मनी है। उन्होंने नस्ल और शारीरिक गठन को इसका आधार माना। उसने अपनी धारणा में निम्न तर्क प्रस्तुत किये-

(1) आर्यों की प्रथम जातीय व्यवस्था यह थी कि उनके बाल भूरे थे। फ्लूटार्क एवं सुला के बाल भी भूरे थे। यह व्यवस्था आज भी मिलती है।

(2) जर्मनी के कुछ भागों में हुई खुदाई में मिट्टी के भाण्डे मिले हैं जो आर्यो की ही कृति होनी चाहिए।

(3) ये विशेषताएं स्केन्डेनि-वियन्स में भी पाई जाती हैं इसलिए पेन्का के समर्थन में हर्ट ने भी इसे आर्यों का मूल निवास स्थान माना है।

(4) कुछ इतिहासकारों ने पुरातत्व के आधार पर बाल्टिक समुद्रतट को आर्यो का मूल निवास स्थान माना है।

मीमांसा-शरीर रचना अथवा बालों के रंग के आधार पर जर्मनी अथवा बाल्टिक समुद्रतट को आर्यो का मूल निवास स्थान नहीं माना जा सकता है। पातंजलि ने भूरे बालों का होना ब्राह्मणों का स्वाभाविक गुण माना है। रोम में भूरे बालों का होना एक कौतुक का विषय माना जाता है। इसलिए वहां विद्वानों का ध्यान प्लूटार्क और सूला पर गया। इसी तरह पाषाण कालीन सामग्री अथवा एक दो मृद भाण्ड मिल जाना ही आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं बना सकता है।

नेहरिंग, ब्रेन्डेस्टीन तथा गार्डन चाइल्ड ने मत रखा कि दक्षिणीरूस आर्यों का मूल निवास स्थान है। उनके तर्क है-

(1) यूकराइन में 3000 बी. सी. के कुछ भाण्ड मिले हैं। नेहरिंग के अनुसार वे आर्यों की ही कृति हैं।

(2) आर्यों का मूल निवास स्थान उनके वनस्पति और पशु-पक्षियों के ज्ञान के आधार पर शीतोष्ण कटि बन्ध बताया जाता है इसलिए आर्य दक्षिणी रूप के ही निवासी रहे हैं क्योंकि यह स्थान शीतोष्ण कटि बन्ध में ही है।

मीमांसा-नेहरिंग और गार्डन द्वारा प्रतिपादित दक्षिणी रूप का सिद्धांत भी न्याय संगत प्रतीत नहीं होता है। प्रथम तो स्टेप्स में वे भौगोलिक परिस्थितियां उपलब्ध नहीं है जो आर्यों के लिए आवश्यक बताई गई हैं चाहे स्टेप्स शीतोष्ण कटिबन्ध में ही क्यों न हो। दूसरे भाषा विज्ञान के आधार पर स्टेप्स आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं हो सकता। इन्हीं कारणों से प्रो. गाइल्स ने इस धारणा का विरोध किया है। वास्तव में यूरोप को आर्यो का मूल निवास मानने में उनकी यूरोपीय भावना ही मुख्य है।

मध्य एशिया-आर्यों का मूल निवास स्थान मध्य एशिया था, इस मत का प्रतिपादन सर्व प्रथम सन् 1920 ई. में जे.जे. रहोड ने किया फिर सन् 1859 ई. में इस मत का समर्थन मैक्स मूलर ने किया। एडवर्ड मेयर ने इस धारणा का समर्थन करते हुए पामीर के पठार को आर्यो का मूल निवास स्थान बताया। कीथ ने भी इस मत का समर्थन किया।

भारतीय विद्वानों में यदुनाथ सरकार तथा द्वारका प्रसाद मिश्र ने भी इस धारणा को स्वीकार कर लिया। इस धारणा के संबंध में निम्न तर्क प्रस्तुत किये गये-

(1) मैक्स मूलर ने कहा कि आर्य संस्कृति का बोध वेद तथा जिन्द अवेस्था से होता है। अत: स्वाभाविक है कि आर्यों का मूल निवास स्थान भारत के समीप ही कहीं होगा क्योंकि वेद और जिन्द अवेस्था में पर्याप्त साम्य है। यह साम्य इस बात का प्रतीक है कि इन दोनों देशों भारत तथा ईरान के निवासी कभी बहुत दिनों तक साथ रहे होंगे। कालान्तर में किसी कारण विशेष से उन्होंने स्थान परिवर्तन किया होगा। वे लोग वहां से तीन जत्थों में खाना हुए होंगे। उनमें से एक जत्था भारत एक यूरोप तथा एक ईरान चला गया होगा।

(2) मैक्स मूलर ने भी प्रो. गाइल्स की तरह भाषा विज्ञान का सहारा लिया है। उनका कहना है कि एशिया के दक्षिण पूर्व और यूरोप के उत्तर पश्चिम में दो भाषाओं की श्रेणी का प्रभाव है और मध्य एशिया में आकर से एक दूसरे को प्रभावित करती है।

(क्रमश:)

पृष्ठ 4 का शेष-काम आयें सर्वदा...

यथापूर्व भाग लेता रहा। यज्ञादि जन कल्याण कार्य कराये जाने से प्रसन्न होकर वह मन ही मन राजा के प्रति भरपूर शुभ कामनायें करने लगा। अभी तक मन्त्री ने अपनी आख्या राजा को नहीं बतायी थी। राजा ने स्वयं ही अपने आन्तरिक भाव परिवर्तन की भूमिका मन्त्री को बतलाना शुरु कर दी-जिसका सार यह था कि वह व्यापारी मुझे बुरा नहीं अपितु अच्छा लगने लगा है। लोकोक्ति 'दिल से दिल को राहत' चरितार्थ हो गई। अब मन्त्री ने भी अपनी गुप्त अन्वेषण एवं राष्ट्रभृतयज्ञ की योजना का राजा के समक्ष रहस्योद्घाटन कर दिया।

ऋग्वेद के असीम क्षीर सागर में से उभरती है उसकी नवनीत तुल्य अन्तिम ऋचा जो राष्ट्र-परिवार में राम-संकल्प बद्धता का सन्देश देती है :

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋ० 10.191.4।।

हो सभी के सम हृदय संकल्प अवरोधी सदा।

मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा।।

अपने शिक्षण संस्थान में आचार्यगण इस ऋचा का पाठ या अर्थ गायन ही नहीं इसका व्यावहारिक अभ्यास भी कराते रहे हैं, जो मुनि सनत्कुमार के गुरुकुल में आयोजित दीक्षान्त समारोह के दृश्य दर्शन से स्पष्ट झलकता प्रतीत होता है। वृहत सभा भवन के बड़े मंच पर एक ओर आचार्यगण व दूसरी ओर राज्याधिकारी गण विराजमान थे। इन दोनों के मध्ये स्थित उच्चासन पर गुरुकुल पति मुनि सनत्कुमार व राज्य अधिपति (सम्राट) विराज रहे थे। सामने के मैदान में सभी वे ब्रह्मचारी बैठे थे, जिन्हें दीक्षान्त (समावर्तन) के फलस्वरूप आगामी कार्यक्षेत्र के लिए अपने घर प्रस्थान करना था। मुनि सनत्कुमार ने ब्रह्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा-अब तक शिक्षण काल में आप लोगों से बहुत प्रश्नोत्तर हुए हैं। आज आपसे अन्तिम प्रश्न करते हैं। बताइए-जीवन में आगे क्या बनना चाहते हैं-अधिपति या बृहस्पति? सभी का एक स्वर से सामूहिक उत्तर था-बृहस्पतिः बृहस्पतिः बृहस्पति। उत्तर सुनकर सम्राट महोच्चार कर उठे-मुनि महाराज की जयः जयः जयः। समान संकल्प व हृदय वाले इन्हीं युवकों में से राज राज के लिए चुने गये युवक ही कह सकेंगे-वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिता'' (यजु. १.२.३) यथा अधिपति तथा प्रजा-मति'' अर्थात् ''यथा राजा तथा प्रजा'' के अनुसार राष्ट्र में सब सबके लिए शुभ कामना करने वाले होंगे तो सार्थक हो उठेगा-

श्रुति संकल्प वयंस्यामपतयोस्थीणाम्''

(ऋ० 10.121.10)

अर्थात् सभी राष्ट्र नागरिक यथायोग्य धनैश्वर्यों के स्वामी होंगे।

नयन मुस्कायें-अधर उत्सव मनायें।

काम आयें सर्वदा शुभ कामनायें।।

नये सत्संग हाल में टाईल लगाने का काम शुरु हुआ

आर्य समाज मन्दिर (गुरुकुल विभाग) फिरोजपुर शहर में लगभग एक साल से भवन निर्माण हो रहा है। जिसका काम धीरे-धीरे चल रहा है क्योंकि आर्य समाज की आर्थिक दशा ठीक नहीं है ज्यों-ज्यों दान एकत्रित होता है। उसी अनुसार ही खर्चे हो रहा है। आज निर्णय करके टाईल लगाने का काम शुरु किया। टाईल लगाने का शुभारम्भ डॉ० विनोद मेहता तथा श्री शन्ति भूषण शर्मा जी द्वारा पहली टाईल फर्श पर लगाकर शुरु किया गया तथा इस शुभ अवसर पर डॉ० विनोद मेहता ने 21000/- रुपये का चैक आर्य समाज मन्दिर को दान रूप में दिया। उन्होंने अपने विचार प्रगट करते हुये कहा कि मैं जल्द ही और भी दान दूँगा।

प्रधान इन्द्रजीत भटिया तथा महामन्त्री श्री राजीव गुलाटी जी ने कहा कि हमारे वरिष्ट सदस्य की इच्छा थी कि यह आर्य समाज मन्दिर का भवन जो कि लगभग दो सौ साल पुराना था। वह नया तथा सुन्दर बने कुछ पुराने सदस्य आज इस दुनिया में नहीं है परन्तु वह जहां भी है वहीं देखकर बहुत खुश हो रहे होगे इस भवन को सुन्दर बनता देखकर। श्री भटिया जी ने लोगों से अपील की वह इस पवित्र यज्ञ में दान रुपी आहूति डाले ताकि यह भवन जल्दी ही पूरा हो जाये। हम नये भवन में बैठकर सत्संग का आनन्द ले सके।

अन्त में इस शुभ मौके पर सभी का मुँह मीठा करवाया गया तथा छोटे-छोटे बच्चो नंदनी, सजंना, तथा वंश ने सभी पर फूल फैंके।

यह जानकारी श्री विपन धवन उपप्रधान आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग ने दी। **-विपन धवन उपप्रधान**

पृष्ठ 2 का शेष-मानव जीवन की...

और निःश्रेयस की प्राप्ति है। महर्षि दयानन्द ने वेदोक्त धर्म विषय में ''जिसके आचरण करने से संसार में उत्तम सुख और निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है उसी का नाम धर्म है।'' धर्म एक होता है या अनेक इस विषय में महर्षि दयानन्द का स्पष्ट मत है कि ''सब मनुष्यों के लिए धर्म और अधर्म एक ही है दो नहीं जो कोई इसमें भेद करे तो उसको अज्ञानी और मिथ्यावादी ही समझना चाहिए।'' हम यहाँ स्पष्ट कर दें कि मानव रूप में सबका धर्म एक है, वह है सत्याचरण परन्तु सामाजिक दृष्टि से वर्णाश्रम को ध्यान में रखते हुए धर्म भिन्न भिन्न है अर्थात् सब वर्ण और आश्रमों के धर्म समान नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश पंच समुल्लास में संन्यासियों का क्या धर्म है, प्रश्न का उत्तर देते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं ''धर्म तो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार सत्य भाषादि लक्षण सब आश्रमों का अर्थात् सब मनुष्य मात्र का एक ही है। परन्तु संन्यासी का विशेष धर्म यह हैं कि----''

अभ्युदय (संसारिक उन्नति) से सम्बद्ध अनेक विषय है जिनमें सर्वप्रथम शारीरिक उन्नति है। मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक भोजन उसकी प्रथम आवश्यकता है। वेदोक्त धर्म विषय में महर्षि दयानन्द अथर्ववेद के मन्त्रों का अर्थ करते हुए लिखते हैं-''पय अर्थात् दूध, जल आदि और जो रस अर्थात् शक्कर, औषधि और घी आदि है इनको वैद्यक शास्त्रों की रीति से यथावत् शोध के भोजन आदि करते रहो। वैद्यक शास्त्र की रीति से चावल आदि अन्न का यथावत् संस्कार करके भोजन करना चाहिए। अत्यन्त विषय सेवन से पृथक् रहकर और शुद्ध वस्त्र आदि धारण से शरीर का स्वरूप सदा उत्तम रखना। वीर्य आदि धातुओं की शुद्धि और रक्षा तथा युक्ति पूर्वक ही भोजन व वस्त्र आदि का धारण करना है इन अच्छे नियमों से उमर को सदा बढ़ाओ।'' मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से पृथक् उसके जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। घर में माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी और घर से बाहर अनेक सामाजिक संगठनों से व्यक्ति का सम्बन्ध रहता है। उन सबके प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करके ही वह सांसारिक उन्नति प्राप्त करता है। परन्तु केवल सांसारिक, भौतिक दृष्टि से उन्नत होने से मनुष्य को सच्चा सुख, आनन्द प्राप्त नहीं होता। धन में सभी लोग सुख समझते हैं। परन्तु लाखों मनुष्य हैं, जिनके दुःखों का एक मात्र कारण उनका धन है, धन के कारण लोग उनसे ईर्ष्या करते है, धन ही के कारण उनकी जान जाती रहती है। इसलिए धन में वास्तविक सुख नहीं। क्योंकि संसार के विषयों का रस क्षणिक हैं, अन्त तक टिकने वाला नहीं।

इसलिए शाश्वत आनन्द की प्राप्ति के लिए इस भौतिक संसार के पीछे अभौतिक सत्ता की ओर जाना होगा। दूसरे शब्दों में हमें अध्यात्मवाद की शरण लेनी होगी। क्योंकि ईश्वर की सत्ता में विश्वास उसकी स्तुति प्रार्थना और उपासना, विवेक, वैराग्य, शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान, श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार आदि उपायों से ही परमानन्द की प्राप्ति होती है। इससे सिद्ध होता हैं कि जैसा हमने प्रारम्भ में कहा था संसार में दो सत्ताएं हैं भौतिक तथा आध्यात्मिक। संसार सत्य है, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। परन्तु वह अभौतिक या आध्यात्मिक सत्ता भी अन्तिम वास्तविकता है, यह भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि संसार तो हमारे सामने मौजूद है। इसकी सत्ता के बारे में हमें कोई भ्रम नहीं। इसे मिथ्या कैसे कहें। संसार का समस्त व्यापार स्वप्नवत् नहीं है। जीवन की यथार्थता इसी में हैं कि इन दोनों सत्ताओं को मानकर चला जाए।

जैसा कि हम देख चुके हैं धर्म इन दोनों सत्ताओं को स्वीकार करता है और जीवन के आध्यात्मिक एवं भौतिक पक्षों का सन्तुलन करता है और चूँकि मानव जीवन भी इन दो तत्वों से मिलकर बना है, इसलिए हम कह सकते हैं कि धर्म ही मानव जीवन की नीं है।

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 10 नवम्बर शुक्रवार से 12 नवम्बर 2017 रविवार तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमें मंगल यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा पंडित बाल कृष्ण शास्त्री (पुरोहित) होंगे। आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ० वीरपाल जी विद्यालंकार (गाजियाबाद) के उत्तम प्रवचन एवं श्री कल्याण सिंह जी बेदी भजनोपदेशक (रूड़की) तथा पंडित राजेन्द्र शास्त्री जी के मनोहर भजन होंगे। कार्यक्रम 10 और 11 नवम्बर 2017 को प्रातः 7:30 बजे से 9:30 बजे तक और रात्रि 7:00 से 9:00 बजे तक होगा। समापन समारोह रविवार 12 नवम्बर 2017 को प्रातः 8:30 बजे से 12:30 बजे तक होगा। आप सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित प्रधान कर धर्म लाभ प्राप्त करें।

अनिल कुमार (महामंत्री) **विजय सरीन (प्रधान)**

नवांशहर में राहों रोड़ पर नेहरू गेट से शहर की सीमा तक के मार्ग का नाम महर्षि दयानन्द के नाम पर रखने संबन्धी प्रस्ताव को किया पारित

नवांशहर कौंसिल बैठक में नगर कौंसिल के प्रधान श्री ललित मोहन पाठक ने कहा कि शहर में पिछले 100 वर्ष से कार्य कर रही आर्य समाज संस्था जिसके अधीन शहर में 8 शिक्षण संस्थाएं चल रही हैं, ने राहों रोड़ पर बनने वाले संभावित डिवाइडरों व सड़क की पूर्ण तौर पर साफ सफाई व पौधारोपण इत्यादि की जिम्मेदारी लेने की मंजूरी दी है, जिसके बदले मे इस मार्ग का नाम आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती जी के नाम पर रखे जाने के प्रस्ताव को नवांशहर की नगर कौंसिल ने मंजूर किया। आर्य समाज नवांशहर के अधिकारियों ने इस प्रस्ताव को पारित करने के लिए नगर कौंसिल नवांशहर का धन्यवाद किया।

सम्मान समारोह आयोजित

15 अक्टूबर: महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के उपलक्ष में आर्य समाज, अबोहर द्वारा रविवार को आर्य समाज के सत्संग भवन में शिक्षक-शिक्षार्थी सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. सुशील कुमार वर्मा जी, फाज़िल्का द्वारा ध्वजारोहण किया गया। उस समय ओ३म् ध्वज गीत संगीत अध्यापक दिलीप माथुर जी द्वारा गाया गया और सबने श्रद्धापूर्वक हवन किया। उसके उपरांत सत्संग हॉल में प्रधान सोहनलाल सेतिया ने सभी अतिथियों का पुष्प गुच्छा भेंटकर स्वागत किया तथा दिलीप माथुर ने स्वागत गीत और दयानन्द का भजन प्रस्तुत किया।

मुख्य वक्ता आर. पी. असीजा प्राचार्य म. द. शिक्षा महाविद्यालय ने मंच से वेदों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी दी और बताया कि माता-पिता के प्रति हमारे क्या कर्त्तव्य हैं, दीवाली हमें प्रदूषण रहित मनानी चाहिए। उनके बाद पूर्व एस. डी. एम. बी. एल. सिक्का जी नें गीता और आर्य समाज के बारे में बोला। शिक्षाविद् राकेश सहगल जी ने स्वामी दयानन्द की जीवनी से सम्बन्धित घटनाओं के माध्यम से प्रेरणा दायी विचार प्रस्तुत किये। डी. ए. वी. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. महाजन ने आर्य समाज और डी. ए. वी. के बारे में अपने विचार रखे। अतिथियों द्वारा अबोहर के लगभग 30 विद्यालयों के शिक्षक व उनके प्रतिभावान छात्र छात्राओं को प्रधान सेतिया जी, फकीरचंद गोयल, संजीव सेतिया, संध्या सेतिया, जगदीश धींगड़ा द्वारा सम्मानित किया गया।

मंच का बहुत अच्छे ढंग से संचालन किया। आर्य समाज के महामंत्री अशोक शर्मा जी ने और कार्यक्रम के अंत में रजनीश बजाज जी ने सबका धन्यवाद व आभार ज्ञापित किया। समारोह के अंत में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। **आर्य समाज अबोहर**

महर्षि निर्वाण दिवस एवं दीपावली महापर्व मनाया गया

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर में 19 अक्तूबर 2017 महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाणोत्सव पर एक विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया ने की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से हुआ। आर्य समाज के शिक्षण संस्थान श्रद्धानन्द नन्द महिला महाविद्यालय और वैदिक गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल की सभी छात्राओं तथा सभी स्टाफ सदस्यों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। उन विद्यालयों को छात्राओं ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के भजनों द्वारा सभी का मनमोह लिया।

वैदिक प्रवक्ता डॉ० पवन कुमार त्रिपाठी जी ने मंच का संचालन किया। मुख्य वक्ता प्रो० कुलदीप आर्य जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संसार पर किये उपकारों को याद करते हुए आर्य-समाज से जुड़ने का आहवान किया। भजनोउपदेशक नरेन्द्र पंछी और आर्य समाज के महामन्त्री शशी कोमल जी ने अपने मधुर भजनों से कार्यक्रम की शोभा को बढ़ा दिया।

स्थानीय प्रचारक रविदत्त आर्य जी और संजय कुमार जी ने दीवाली की शुभ कामनाएं देते हुए उस महापर्व पर अपने अपने विचार दिए। उस सुअवसर पर प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी और शशी कोमल जी और साथियों द्वारा श्री रविदत आर्य, श्री नरेन्द्र पंछी, श्री वेद प्रकाश मेहता, श्री पं. मुरारी लाल जी, श्री मुकेश शास्त्री, आचार्य पवन शर्मा जी और विद्यासागर जी को सम्मानित भी किया गया।

श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय को प्रि० सुश्री मनवीन कौर एवं स्टाफ तथा वैदिक गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल की तरफ से अनु बहल एवं स्टाफ ने मुख्य वक्ता श्री कुलदीप आर्य जी को सम्मानित किया। अमृतसर की सभी आर्य समाजो ने उस विशाल कार्यक्रम में भाग लिया। श्री रमन वाही, श्री सुरेन्द्र दता, श्री योगपाल भाटिया, श्री सहगल, विरेन्द्र शर्मा, जोगिन्द्र लाल तथा श्री बलराज जुली, सुखजीत कौर, रजनी अरोड़ा आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे। प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी ने आए हुए सभी मेहमानों का धन्यवाद करते हुए दीपावली पर्व और ऋषि निर्वाण दिवस की शुभ कामनाएं भी दी। शान्तिपाठ एवं यज्ञशेष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

डॉ० पी. के. त्रिपाठी प्रचार मन्त्री

आर्य समाज जीरा में दीपावली पर्व मनाया गया

आज दिनांक 19.10.2017 दिन वृहस्पतिवार को आर्य समाज जीरा में ऋषि देव दयानन्द निर्वाणोत्सव और दीपावली का त्योहार बड़ी ही श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया, जिसमें सर्वप्रथम प्रात: नौ बजे वैदिक यज्ञ आर्य समाज जीरा के पुरोहित किशोर कुणाल जी ने बड़े ही हर्षोल्लास के साथ करवाया, जिसमें सभी सदस्य शामिल हुए और श्रद्धापूर्वक यज्ञ में अपने बच्चों सहित आहुतियाँ डालीं। यज्ञोपरान्त पुरोहित जी ने विस्तारपूर्वक स्वामी दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दयानन्द सचमुच में दयानन्द थे। इनके जीवन से आज हम सभी को यह शिक्षा लेनी चाहिए कि हम इनके जैसे कार्य और जीवन सुधार के साथ-साथ परोपकार और वेद प्रचार का कार्य आजीवन करते रहें ताकि हमारा भी जीवन अच्छाईयों और सचाईयों से ओतप्रोत हो साथ ही साथ ऋषि के ऊपर पुरोहित जी ने एक भजन भी प्रस्तुत किया जिसमें सभी आर्य सजॅजन झूम उठे और गुन गुनाने लगे। इसके बाद आर्य समाज के वरिष्ठ व निष्ठावान् प्रधान श्री सुभाषचन्द्र आर्य जी ने दीपावली व निर्वाणोत्सव के ढेरों सारी बधाईयाँ व शुभकामनाएँ व्यक्त की कि सब का जीवन खुशियों से भरपूर हो और दयानन्द के अधूरे कार्य को पूरे करने के लिए सब कोई व्याकुल हों। अन्त में पुरोहित जी भी आर्य-भाई-बहनों तथा बच्चों को अपना आशिष प्रधान करते हुए कहा कि यह निर्वाणोत्सव व दीपावली सबके लिए प्रेरणादायी हो। तत्पश्चात् शांति पाठोपरान्त प्रधान जी के निर्देशानुसार सभी को जलपान कराया गया और मिठाईयाँ बाँटी गईं।

किशोर कुणाल आर्य समाज, जीरा

आर्य समाज बरनाला में ऋषि-निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला की ओर से दिनांक 17.10.2017 को गाँधी आर्य हाई स्कूल के प्रांगण में बरनाला की समूह आर्य शिक्षण संस्थाओं की शमूलियत से महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान-दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। अग्निहोत्र से कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। तत्पश्चात् पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री ने विस्तारपूर्वक स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रेरणादायक चर्चा की। इस अवसर पर गणमान्य सदस्य श्री शिव कुमार बत्ता, श्री राम चन्द्र आर्य एवं श्रीमती-रञ्जना मैनन ने अवसर अनुकूल भजन प्रस्तुत किए। श्री राम शरणदास गोयल, श्री भारत भूषण मैनन, श्री सतीश सिन्धवानी, श्री राम कुमार सोवती एवं डॉ० नीलम शर्मा ने ऋषि जीवन के प्रेरणादायक प्रसंगों का वर्णन करते हुए अपने वक्तव्य प्रदान किए। समूह आर्य शिक्षण-संस्थाओं के विद्यार्थियों द्वारा अवसर अनुकूल सामूहिक भजन प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोताओं को निहाल कर दिया। इस कार्यक्रम में श्री दीपक सोनी जी, एम. डी. आस्था-इन्क्लेव, बरनाला मुख्य अतिथि के रूप में पधारे हुए थे। आपने आर्य समाज , बरनाला को दानस्वरूप पन्द्रह हजार रुपये की राशि प्रदान की। अन्त में मानयोग प्रधान-डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने मुख्य अतिथि तथा समूह आर्य शिक्षण-संस्थाओं विशेष कर श्री राम कुमार सोवती जी का जिनके सौजन्य से कार्यक्रम का आयोजन किया गया; सभी का धन्यवाद किया एवं वैदिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रेरणादायक वक्तव्य प्रदान किया। प्रतियोगी छात्र/छात्राओं को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए। शान्ति-पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **-तिलक राम मन्त्री आर्य समाज, बरनाला**

ऋषि-बलिदान-दिवस पर बरनाला में प्रभात-फेरी

दिनांक 19.10.2017 दिन वृहस्पतिवार को प्रात: 5:30 बजे आर्य समाज बरनाला की ओर से बरनाला की समूह आर्य शिक्षण संस्थाएं श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज एवं कॉलजिएट स्कूल, गाँधी आर्य सीनियर सैकण्डरी एवं हाई स्कूल, दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, आर्य मॉडल हाई स्कूल के समूह स्टाफ तथा छात्र/छात्राओं के सहयोग से महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर वैदिक परम्परा अनुसार प्रभात फेरी निकाली गई। जिसमें श्री शिवकुमार बत्रा, पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री, श्री राम चन्द्र आर्य, आर्य संस्थाओं के स्टाफ एवं छात्र/छात्राओं द्वारा वैदिक भजन प्रस्तुत किए। मानयोग प्रधान-डॉ० सूर्यकान्त शोरी जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री भारत भूषण मैनन जी के कुशल मार्ग दर्शन में प्रभात फेरी का काफ़ला बरनाला के मुख्य बाजार-हंडियाया बाजार एवं फरवाही बाजार से गुजरता हुआ आर्य समाज बरनाला में आगमन हुआ। इस दौरान गणमान्य सदस्यों श्री राम कुमार सोबती जी, श्री भारत भूषण मैनन, डॉ० सूर्यकान्त शोरी, श्री राम शरणदास गोयल, श्री सतीश सिन्धवानी, श्री विजय आर्य, श्री चन्द्र मोहन गर्ग, मंत्री-तिलकराम ने प्रेरणादायक वैदिक नारे लगाए व अपने-अपने वक्तव्य भी प्रदान किए। अन्त में प्रधान डॉ० सूर्यकान्त शोरी जी ने समस्त उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के साथ प्रभात फेरी का समापन किया। श्री खेमपाल आर्य, बरनाला के मशहूर गुड़ के व्यापारी के सौजन्य से प्रशाद स्वरूप केले, बिस्कुट एवं चाय का वितरण किया गया। **-तिलक राम मन्त्री आर्य समाज, बरनाला**

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17 RNI No. 26281/74

महर्षि दयानन्द मठ ढन मुहल्ला जालन्धर का 53वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द मठ वेद मंदिर ढन मुहल्ला जालन्धर के 53वें वार्षिकोत्सव पर पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट को सम्मानित करते हुये महर्षि दयानन्द मठ ढन मुहल्ला के पदाधिकारी एवं चित्र दो में मंच पर विराजमान पंडित सुरेश शास्त्री, स्वामी सदानन्द जी सरस्वती, श्री अजय महाजन जी मंत्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर, श्री आचार्य देवराज जी कपूरथला, श्री राजेश प्रेमी जी जालन्धर।

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला जालन्धर का वार्षिकोत्सव दिनांक 23 अक्तूबर सोमवार से दिनांक 29 अक्तूबर 2017 तक बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सोमवार 23 अक्तूबर को श्री सुरेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में शुरू हुए वार्षिकोत्सव की शुरूआत वैदिक ब्रह्म यज्ञ, स्वस्तिवाचनम् एवं ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के साथ पवित्र हवकुण्ड में चतुर्वेदशतकम् के पवित्र मन्त्रों के द्वारा शुरू हुआ। प्रतिदिन बनें यजमानों में श्री राजिन्द्र देव विज, प्रभा विज, आनन्द किशोर आनन्द, मधु आनन्द, विभा आनन्द, मोहित आनन्द, नन्दिता विज, कैलाश गुप्ता, संतोष बांसल, सरोज बांसल, मदन लाल कालड़ा, अनिल अरोडा, रजनी अरोड़ा, विनय आर्य, वरूण, संगीता आर्य, रामकृष्ण, बालकुष्ण अरोड़ा, किशन अग्रवाल, सावित्री अग्रवाल, रामनिवास बांसल, सुमित्रा अग्रवाल, प्रेम प्रकाश मोगला, राजिन्द्र शिंगारी, सुरक्षा रानी, भारती एवं दिनेश कुमार, प्रदीप भण्डारी, संगीता भण्डारी, जगमोहन भण्ड़ारी एवं कुसुम भण्ड़ारी, राजु एवं गीता कुमारी, अरूण कोहली एवं मीरा कोहली, राजेश प्रेमी, आदित्य प्रेमी, साक्षी प्रेमी, नीरू कपूर एवं मनोज कपूर, हिन्दपाल सेठी एवं रजनी सेठी, सुदेश अरोड़ा, ओम प्रकाश अग्रवाल, हेमन्त विज, सुशीला भगत, राकेश भगत एवं संगीता भगत, अजय महाजन एवं ऊषा महाजन, ध्रुव मित्तल एवं शिव मित्तल, विमला मित्तल, रेणु मित्तल, रवि मित्तल एवं सुदेश मित्तल, सुदेश मित्तल, सुदेश हाण्डा, राजिन्द्र कुमार सपन्नीक एवं सुषमा अरोड़ा जी सहित संगत ने भी पवित्र हवनकुण्ड़ों में श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ आहुतियां डाली। सोमवार से शनिवार तक प्रात:कालीन एवं सांयकालीन सत्र में आचार्य देवराज एवं श्री सुरेश शास्त्री जी के प्रेरणादायक एवं गृहस्थ जीवन को श्रेष्ठ बनाने एवं सामाजिक समस्याओं के बारे में प्रवचन होते रहे। सोमवार एवं मंगलवार को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी ने भी अपने मुखारविन्द से मार्गदर्शन किया। 29 अक्तूबर रविवार को चतुर्वेदशतकम् यज्ञ का पूर्णाहुति यज्ञ ब्रह्मा श्री सुरेश शास्त्री जी द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ करवाई गई। ट्रस्ट के प्रधान श्री ओम प्रकाश अग्रवाल जी ने वैदिक जयघोषों के बीच ओ३म् पताका पहराकर ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण के अवसर पर श्री ओ३म प्रकाश अग्रवाल एवं स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी ने अपना उद्बोधन दिया। मठ के अधिकारियों ने श्रीमती सुशीला भगत एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी को आर्य समाज के प्रति सेवाओं के लिए सम्मानित किया। इसके पश्चात आर्य महासम्मेलन की प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन के प्रारम्भ में श्रीमती नीतू कुमारी एवं सात दिनों से भजनों के द्वारा मार्गदर्शन दे रहे श्रीमती सीमा अनमोल तथा श्री राजेश अमर प्रेमी जी ने अपने मधुर भजनों के द्वारा सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी इस अवसर पर विशेष रूप से पधारे थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में अपने जीवन की प्रेरणदायक घटनाएं सुनाकर सभी को आर्य समाज में आने के लिए प्रेरित किया। श्रीमती रश्मि घई जी ने अपने मधुर कण्ठ से दो भजन सुनाकर आई हुई संगत को झूमने पर मजबूर कर दिया। आचार्य देवराज जी का प्रवचन भी प्रेरणादायक रहा। यज्ञ ब्रह्मा श्री सुरेश शास्त्री जी का प्रवचन हुआ जो कि अपने आप में विद्वत्तापूर्ण था। मुख्य अतिथि श्री अजय महाजन महामन्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन ने भी अपना प्रेरणादायक सम्बोधन दिया। इसके पश्चात अध्यक्ष श्री ध्रुव कुमार मित्तल का अध्यक्षीय भाषण हुआ। महर्षि दयानन्द मठ के प्रधान श्री कुन्दन लाल अग्रवाल जी ने आए हुए सभी अतिथियों, विद्वानों एवं अन्य गणमान्यों का धन्यवाद किया। मुख्य अतिथि श्री अजय महाजन महामन्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन ने भी अपना प्रेरणादायक सम्बोधन दिया। मुख्य अतिथि श्री अजय महाजन, अध्यक्ष श्री ध्रुव कुमार मित्तल, रश्मि घई, श्री अरविन्द घई, श्री सुरेश शास्त्री, आचार्य देवराज, राजेश प्रेमी, सीमा अनमोल को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। मंच का संचालन सुयोग्य एवं कर्मठ मन्त्री श्री राजिन्द्र देव विज ने किया। मठ के प्रति समर्पण भावना को देखते हुए श्री राम भुवन शुक्ला एवं श्री बलदेव राज को उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री सत्यशरण जिंदल, अरूण कोहली, प्रकाश चन्द्र सुनेजा, विनीत आर्य, बांके लाल पुरी तथा सभी आर्य समाजों के अधिकारियों एवं गणमान्य महानुभावों ने भाग लिया।

कुन्दन लाल अग्रवाल प्रधान
महर्षि दयानन्द मठ

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली का पर्व मनाया

आर्य समाज धूरी में दिनांक 19 अक्तूबर 2017 को वीरवार को ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली का पर्व प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार गर्ग व महामन्त्री प्रहलाद कुमार आर्य की अगुवाई में और महाशय श्री प्रतिज्ञापाल जी की अध्यक्षता में मनाया गया। सर्वप्रथम पं. शैलेश शास्त्री ने विशेष यज्ञ करवाया। यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य समाज के महामन्त्री प्रहलाद कुमार आर्य बनें तथा आर्य समाज के शिक्षण संस्थाओं के अध्यापक, अध्यापिकाओं तथा आर्य समाज के सभी अधिकारी महानुभावों ने आहुतियां डाल कर विश्व शान्ति के लिए प्रार्थना की। आर्य स्कूल, यश चौधरी मॉडल स्कूल व आर्य महिला कॉलेज के छात्राओं द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति भजन प्रस्तुत किए गए। मंच संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री रामपाल आर्य ने किया और स्वामी दयानन्द जी को श्रद्धांजलि दी। विद्यार्थियों से धार्मिक संस्कारों से सामान्य ज्ञान बढ़ाने हेतू प्रश्नोतरी की गई। विजेताओं को महाशय प्रतिज्ञापाल, डा. एस. के सरीन, रमेश आर्य, सतीश पाल, आर्य वीरेन्द्र कुमार गर्ग, विकास गर्ग, विकाश शर्मा, आर. पी. शर्मा, पवन कुमार गर्ग, सोम प्रकाश, वासुदेव आर्य तथा स्त्री आर्य समाज धूरी के द्वारा किया गया। आर्य समाज के प्रधान वीरेन्द्र कुमार गर्ग जी ने आए हुए सभी लोगों को व तीनों संस्थाओं के अध्यापक-अध्यापिकाओं, छात्र-छात्राओं को धन्यवाद किया और बताया कि ऐसे महापुरूषों के जीवन से हमें श्रेष्ठ बनने के लिए प्रेरणा लेनी चाहिए। अन्त में सभी को दीपावली की शुभकामनाएं देकर कार्यक्रम को विराम दिया गया।

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज चौक पटियाला में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ एवं वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन दिनांक 6 नवम्बर 2017 से दिनांक 12 नवम्बर 2017 तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा एवं प्रमुख वक्ता आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी मुम्बई एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री सतीश सुमन जी एवं श्री सुभाष राही जी होंगे। आप सभी सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पहुँचकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।